मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2019 marumegh
ISSN:2456-2904

फलदार पौधों की रोपाई और देखभाल

योगेन्द्र सिंह और नरेन्द्र कुमार वर्मा
फल विज्ञान शोधकर्त्ता छात्र–उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय –झालावाड़
326023(राजस्थान)
(yogendrasinghphd938@gmail.com)

जमीन का चयन–फलों के बगीचों के लिए दोमट या बलुई दोमट मिट्टी अच्छी रहती है।जमीन में अधिक गहराई तक कोई भी कठोर परत नहीं होनी चाहिए व जलनिकासी का उचित प्रबंध होना चाहिए। लवणीय व क्षारीय जमीन में बेर आंवला, लसोड़ा, खजूर व बेलपत्र आदि फल लगाने चाहिए।

गड्डे खोदने का समय –अधिकतर फलदार पौधे वर्षा ऋतु में लगाये जाते है इसलिये गड्डे खोदने का सही समय मई–जून माह होता है क्योंकि इस समय तेज गर्मी पड़ने से गड्डे की मिट्टी में उपस्थित सभी हानिकारक जीवाणु और कीड़े–मकोड़े मरजाते है।जहां पर सिचाई की उचित सुविधा है वहाँ फरवरी–मार्च के महीने में भी पौधे लगाये जा सकते हैं लेकिन ध्यान रहे की पौधे लगाने के 15–20 दिन पहले गड्डे खोंदें।

गड्डे का आकार–बड़े पौधे जैसे–आम, आँवला, बेर, संतरा, किन्नों, बेलपत्र आदि के लिये गड्डे का आकार तीन फिट लंबा, चौड़ा और तीन फिटगहरा रखें। अनार, अमरूद नींबू के लिये गड्डे का आकार दो फिट लंबा, चौड़ा और दो फिटगहरा रखें। पपीता के पौधे लगाने हेतु गड्डे का आकार डेढ़ फिट लंबा, चौड़ा और डेढ़ फिट गहरा रखें।

गड्डे की भराई–गड्डों की खुदी हुई मिट्टी में से कंकड़, पत्थर, घास–फूस को निकालकर अलग कर लें तथा गड्डो को 15–20 दिन के लिए खुला छोड़ दें जिससे की मिट्टी में उपस्थित सभी हानिकारक जीवाणु और कीड़ें नष्ट हों जाये। गड्डे भरने के लिये ऊपर की डेढ़ फिट मिट्टी में अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद और एक किलो सुपर फॉस्फेट मिलायें। यदि खेत की मिट्टी काली या भारी होतो ऐसे गड्डे में एक तिहाई भाग खेत की मिट्टी एक तिहाई भाग बालू एक तिहाई भाग सही हुई गोबर की खाद मिलाकर गड्डे को भरें।गड्डे भरने के बाद यदि वर्षा न होतो हल्कीसी सिचाईं करे जिससे कि गड्डे की मिट्टी नीचे बैठे जावे।

फलदार पौधे का चयन–राजस्थान की जलवायु में खासतौर से आमपपीता, करौंदा, आंवला, नीबू, अनार, बेल, बेर व लसोड़ा आदिफलों की खेती आसानी से की जा सकती है। जिन क्षेत्रों में पाला अधिक पड़ता है उन क्षेत्रों में पपीता व अंगूर के बाग नहीं लगाने चाहिए। अधिक गर्मी व लू वाले क्षेत्रों में बेर व लसोड़ा के पौधे लगाने चाहिए। झालवाड़ जिला नीबू वर्गीय फल उत्पादन में अपना अलग ही स्थान रखता है अतः इस क्षेत्र में मौसमी संतरा व किन्नू के पौधे लगाकर किसान भाई अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते है।

पौधे की रोपाई–हमेशा पौधे सरकारी या प्रमाणित नर्सरी से ही खरीदें। पौधे की रोपाई वर्षा ऋतु (जुलाई–अगस्त) व बंसत ऋतु (फरवरी–मार्च) में शाम के समय करनी चाहिए। पौधे को रोपने से 2 घंटे पहले लिपटी हुई घास पिंड व पालिथीन थैली को थोडे समय के लिए पानी में रखकर उस में भरी हवा को बाहर

निकालें जिससे पौधा लगाते समय पिंड की मिट्टी बिखरे नहीं। पौधा लगाने से पहले लिपटी हुई घास व पालीथिन थैली को मिट्टी के पिंड से हलके से हटा देना चाहिए। व जड़ों को पूरी तरह बचाकर रखना चाहिए। यदि पौधा ग्राफटेड है तो पौधे पर लगे पैबंद वाले स्थान व शाखा के जुड़ाव वाले बिंदु को जमीन के तल से 25 सेंटीमीटर ऊपर रखना चाहिए जरूरत होतो पौधे को सहारा दें ताकि पौधा झुके नहीं।

सिंचाई–शुरू के 2 महीने तक पौधों को पानी ज्यादा जरूरत होती है इस समय 2–3 दिनों के अंतर पर पानी देना चाहिए।

वायुरोधी पेड़ लगाना–लू गर्म हवाओं व अधिक ठंडी अवाओं से पौधो को बचाने हेतु उत्तर व पश्चिम दिशा में देशी आम जामुन बेल शहतूत खिरनी देशी आंवला शरीफा, करौंदा, इमली आदि फलों के पेड़ लगाने चाहिए।

सधाई और कटाई–पौधों में शुरू से ही सधाई कर के जमीन से तकरीबन 5 से 6 फुट तक सीधा खड़ा करने के बाद चारों दिशाओं में फैलाना चाहिए, पौधें का बीच का हिस्सा हमेशा खुला रखना चाहिए बाद में खराब शाखाओं को काटकर निकाल देना चाहिए।

दीमक की रोकथाम–दीमक की रोकथाम के लिए 25–30 मिली लीटर क्लोरो–पाईरीफोरस को 10 लीटर पानी में मिलाकर 15 दिनों के अंतर पर 3 बार जड़ के आसपास डालना चाहिए।

खास फलों के पौधों को निम्नलिखित दूरी पर लगाकर अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है–

फसल	पौधों व कतारों के बीच की दूरी (मीटर)	गड्ढों का आकार (फुट)	प्रति हेक्टेयर पौधों की संख्या
आम	10x10/8x8	3x3x3	100/156
आंवला	8x8	3x3x3	156
नीबू/मौसमी	5-6x5-6	2x2x2	277
अमरूद	6x6/8x8	2x2x2	277/156
पपीता	3x3	1.5x1.5x1.5	1111
पपीता	2x2	1.5x1.5x1.5	2500
अनार	5x5	2x2x2	400
बेर	6x6	3x3x3	277
लसोड़ा	10x10	3x3x3	100
खजूर	6x6	3x3x3	277

खास फलों की कुछ किस्में–

आंवला	अमरूद	नीबू	बेर	अनार	आम	अंगूर	खजूर
कृष्णा, कंचन, एनए–7, आनंद–1 बनारसी	लखनऊ 49 अर्का मृदुला, इलाहाबादी सफेदा	कागजी, बारह मासी, पंतलाइम, विक्रम, परमालिन	गोला, सेब, उमरान, मूंडीया	गणेश अरक्का मृदुला, सिंदूरी	दशहरी लंगड़ा तोतापुरी केशर हापूस	थामसन सीडलैंस अर्का यामब्यूटी सीडलैस परलेट	हलावी खरदावी शामरान बरही